13-11-2018

प्रेस विज्ञप्ति

किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय में फेफड़ों में मवाद जम जाने के दो अलग–अलग मामलों में मेडिसन विभाग में जनरल सर्जरी के प्रो0 सुरेश कुमार ने सफलता पूर्वक ऑपरेशन किया। यह ऑपरेशन बेहद जटिल एवं खर्चीला माना जाता है।

बता दें कि इस बीमारी को टी0बी0 का ही एक प्रकार माना जाता है, जिसमें फेफड़ों के ऊपर झील्ली की एक मोटी परत जम जाती है। जिसकी वजह से फेफड़े पूरी तरह से काम नहीं कर पाते हैं। इस बारे में आज दिनांक 13 नवंबर 2018 को आयोजित पत्रकार वार्ता में डॉ0 सुरेश कुमार ने बताया कि यह बीमारी टी0बी0 का ही एक सामान्य रूप है लेकिन इलाज में लापरवाही अथवा बीमारी का पता न चलने पर यह एक गंभीर समस्या बन जाती है।

डॉ0 सुरेश कुमार ने बताया कि आमतौर पर इस बीमारी का इलाज ओपन सर्जरी के द्वारा इसका इलाज मुमकिन है लेकिन उसमें मरीज का खून ज्यादा बहने के साथ ही दर्द अधिक होता है साथ ही सुधार की प्रक्रिया काफी धीमे होती है, जबकि दूरबीन विधि से किए गए इलाज में दर्द के साथ ही ब्लीडिंग कम होती है। इस सर्जरी को करने में उन्हें चार घंटे का वक्त लगा। जिसमें फेफड़ों पर जमी ऊपरी परत को हटा दिया गया। इस ऑपरेशन को **Video Assisted Tharacic Surgery (VATS-Guided Decortication)** नामक सर्जरी की विधि द्वारा किया जाता है।

डॉ0 सुरेश कुमार ने बताया कि पहला मामला आजमगढ़ निवासी रूख्सार बानो **(**बदला हुआ नाम**)** का है। इस पेशेंट को जुलाई 2017 में टाइफाइड बुखार हुआ था। जिसका इलाज 6 माह तक आजमगढ़ में ही चला। इसके साथ ही इनका इलाज कर रहे डॉक्टर ने उनकी टी0बी0 की दवा भी चालू कर दी। इलाज के बाद भी कोई लाभ होता न देख एक्स–रे कराने पर पता चला कि मरीज के फेफड़े में पस हो गया है। जिसका इलाज आजमगढ़ में ही हुआ और मरीज के फेफड़े में एक ट्यूब डाल दी गई। इसके साथ ही मरीज का इलाज बलिया में भी चला लेकिन कोई फायदा न होने के कारण 06 जुलाई 2018 को मरीज को लखनऊ स्थित के0जी0एम0यू0 लाया गया। जहां मरीज की कई जांचे, एक्स–रे एवं सी0टी0स्कैन किया गया। इसके बाद डॉक्टरों की एक टीम ने डॉ0 सुरेश कुमार के नेतृत्व में इस मरीज का ओपन ऑपरेशन दिनांक 31 अक्टूबर 2018 को किया, जो कि सफल रहा और फिलहाल मरीज पूर्णतः स्वस्थ है। इस ऑपरेशन का कुल खर्च के0जी0एम0यू0 में 50 हजार आया।

वहीं इसी प्रकार का दूसरा मामला लखीमपुर की शिवानी **(**बदला हुआ नाम**)** का है। इस मरीज का इलाज 13 जुलाई 2018 को लखीमपुर कें निजी अस्पताल में पहली बार शुरू किया गया। जिसके तहत 16 जुलाई 2018 को फेफड़े से सिरिंज द्वारा मवाद निकाला गया। लेकिन तीन माह बाद ही पुनः फेफड़े में मवाद भरने के बाद बाद दिनांक 29 अक्टूबर 2018 को मरीज को के0जी0एम0यू0 में भर्ती किया गया। इस दौरान मरीज का ऑपरेशन 05 नवंबर 2018 को दूरबीन विधि **(Decortication)** से किया गया। जो पूर्णतः सफल हुआ और मरीज अब स्वस्थ है। इस ऑपरेशन में मरीज का लगभग 25 हजार रूपए खर्च हुए। ऑपरेशन करने वाली सर्जरी टीम में डॉ0 सुरेश कुमार के संचालन में टीम सदस्यों के रूप में डॉ0 संजीव कुमार, डॉ0 गणेश यादव, डॉ0 मैरी तथा ऐनेस्थीसिया में डॉ0 दिनेश सिंह व डॉ0 अभिषेक एवं नर्सिंग स्टाफ के तौर पर इंदु यादव थी।